Multidisciplinary Multilingual Research Journal, e-ISSN: 3107-8141
October-December 2025 | Volume: 01, Issue: 02, Page No.: 32-38
https://doi.org/10.64006/mmrj/1205

ORIGINAL ARTICLE |Received:05th August 2025 | Revised:14th September 2025 | Accepted:10th October 2025 | Published:18th December 2025

पाश्चात्य परंपरा में मन का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार[1]

सारांश

भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच संबंधों की जड़ें प्राचीन व्यापार मार्गों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साझा औपनिवेशिक अनुभवों में निहित हैं। मसालों, वस्त्रों और समुद्री संपर्कों ने दोनों क्षेत्रों को जोड़ते हुए सभ्यतागत संवाद को जन्म दिया। औपनिवेशिक काल में स्वतंत्रता आंदोलनों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में भारत और उत्तर अफ्रीका की सहभागिता ने राजनीतिक पहचान को गहराई दी। आधुनिक काल में भारत ने शिक्षा, तकनीक, बॉलीवुड, योग और सांस्कृतिक सहयोग को उत्तर अफ्रीका में अपनी रणनीतिक पहचान को मजबूत करने के साधन के रूप में प्रयोग किया है। अफ्रीकी संघ और भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन जैसे मंचों पर सहयोग ने इन संबंधों को समकालीन राजनीतिक विमर्श में और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। यह शोधपत्र प्रस्तुत करेगा कि सभ्यतागत कूटनीति केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों में एक ठोस रणनीतिक पहचान और राजनीतिक विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपकरण है।

मुख्य शब्द: *भारत-उत्तर अफ्रीका संबंध, सभ्यतागत कूटनीति, रणनीतिक पहचान, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, औपनिवेशिक अनुभव, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, पैन-अफ्रीकनिज़्म, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, शिक्षा और सांस्कृतिक कूटनीति, राजनीतिक विज्ञान*

This article is published under the **Creative Commons Attribution–Non-commercial (CC BY-NC) License**. Readers are free to share, adapt, and reproduce the material for non-commercial purposes, with appropriate credit to the author(s) and the source. Permission is required for any commercial use.

मनुष्य के सम्पूर्ण स्वास्थ्य का मूल आधार और केन्द्रबिंदु मन है। जिसके बिना केवल मानसिक स्वास्थ्य की ही नहीं, अपितु किसी भी प्रकार के स्वास्थ्य शारीरिक, सामजिक, आध्यात्मिक की कल्पना असम्भव है। अतः मन समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा का आधार है। मन अदृश्य होते हुए कितना शक्तिशाली है इसकी कल्पना करना भी कठिन है। इसकी गति वायु से भी तीव्र है तथा करोड़ों मील दूर स्थित स्थान पर मन के द्वारा लोक-लोकान्तरों तक है। इसकी असीम व्याप्ति को देखकर स्वभावतः यह दार्शनिक जिज्ञासायें समुपस्थित होती हैं कि अंततः मन की प्रकृति व स्वरूप क्या है, कैसे वह व्यक्ति के स्वास्थ्य का आधार है? तथा उसके कार्य व संरचना क्या है? आदि तात्त्विक प्रश्न मानव के समक्ष उपस्थित होते हैं जिनका समाधान के बिना मन के दार्शनिक स्वरूप को समझना असम्भव है। मन की प्रकृति अति सूक्ष्म व अदृश्य होने के कारण तज्जन्य विकृतियों (मनोरोगों) की उपेक्षा की स्थिति बनी रहती है। मन का शरीर व आत्मा दोनों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के कारण यह शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आधार है। किन्तु यह भी एक इतिहास ज्ञात आधारभूत सत्य है कि मानसिक रोगों से मनुष्य, समाज व राष्ट्र की जो हानि होती है वह शारीरिक व्याधियों की तुलना में अधिक भयंकर है। अतः मानसिका स्वास्थ्य को जानने से पहले मन को तात्त्विक रूप से जानना अनिवार्य हो जाता है।

पाश्चात्य जगत् की प्रचलित विभिन्न परम्पराओं में मन के गुण-धर्म व स्वरूप संबन्धित संक्षिप्तरूपेण विचार प्रस्तुतनीय है।

शरीर का स्वरूप स्थूल होने के कारण इसकी एनाटॉमी व विकृतियों को सरलतापूर्वक समझकर तदनुरूप उपचार भी आसानी से किया जा सकता है किन्तु मन की प्रकृति अति सूक्ष्म व अदृश्य होने के कारण तज्जन्य विकृतियों

[1] संस्कृत विभाग, कमला नेहरू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय. anilkumar@knc.du.ac.in

How to cite: कुमार, अ. (2025). पाश्चात्य परंपरा में मन का समीक्षात्मक अध्ययन. *Multidisciplinary Multilingual Research Journal, 1*(2), 32-38. https://doi.org/10.64006/mmrj/1205

(मनोरोगों) की उपेक्षा की स्थिति बनी रहती है। मन का शरीर व आत्मा दोनों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के कारण यह शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आधार है। किन्तु यह भी एक इतिहास ज्ञात आधारभूत सत्य है कि मानसिक रोगों से मनुष्य, समाज व राष्ट्र की जो हानि होती है वह शारीरिक व्याधियों की तुलना में अधिक भयंकर है। अतः मानसिका स्वास्थ्य को जानने से पहले मन को तात्त्विक रूप से जानना अनिवार्य हो जाता है।

मानवीय मन के तात्त्विक विश्लेषण के सन्दर्भ में सर्वप्रथम मन की सूक्ष्म प्रकृति कार्य संरचना व इसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान अत्यावश्यक है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में सर्वप्रथम पाश्चात्य जगत् की प्रचलित विभिन्न परम्पराओं में मन के गुण-धर्म व स्वरूप संबन्धित संक्षिप्तरूपेण विचार प्रस्तुतनीय है।

एकतत्त्ववादी स्पिनोजा का बुद्धिवादी दार्शनिकों में महत्त्वपूर्ण स्थान है जिनके अनुसार `ईश्वर ही सम्पूर्ण विश्व है, ईश्वर और सृष्टि में अभेद सम्बन्ध है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी भी पदार्थ की सत्ता नहीं है'।[2] इस प्रकार स्पिनोजा के मत में शरीर और मन दोनों परस्पर समानान्तर है तथा इनका उद्‌गम एक ही सत्ता ईश्वर है। अतः स्पिनोजा के मत में मन केवल चेतना ही नहीं अपितु आत्मचेतना भी है, जिसे स्पिनोजा ने शरीर के प्रत्यय का प्रत्यय (Idea of the idea of body) कहा है।[3]

लाईब्नित्ज के अनुसार 'समस्त जगत् चिद्‌णुओं (Monads) से निर्मित है। उनमें मन (आत्मा) उच्च कोटि के चिद्‌णुओं से तथा शरीर निम्न कोटि के चिद्‌णुओं से निर्मित है। इन चिद्‌णुओं में विकास का क्रम है जिसमें निम्न कोटि के चिद्‌णु उच्चकोटि के चिद्‌णुओं की ओर अग्रसर है। इस प्रकार शरीर का विकसित रूप या स्तर मन है। मन उच्चकोटिय चिद्‌णु होने के कारण निम्नकोटि चिद्‌णु शरीर आदि को नियंत्रित व निर्देशित करता है।[4] मन शरीर के कार्यों को प्रतिबिम्बित करता है और शरीर मन के कार्यों को, किन्तु मन और शरीर स्वतन्त्र रूप से कार्य करते है और उनमें जो क्रिया-प्रतिक्रिया प्रतीत होती है वह पूर्वस्थापित सामञ्जस्य (Pre-established Harmony) के कारण है।[5]

अनुभववाद के जनक जान लॉक के अनुसार "मनुष्य का मन प्रारम्भ में एक रिक्त पट्टी के समान होता है जिसमें कोई चिह्न या प्रत्यय नहीं होता है।" अनुभव के साथ-साथ ज्ञान व विचारों का संचय होता है।[6] लॉक के अनुसार बुद्‌धि में ऐसा कुछ भी नवीन नहीं है जो पहले इन्द्रियों में नहीं था।[7] अनुभव दो प्रकार का होता है- संवेदन (Sensation) व स्वसंवेदन (Reflection)। संवेदन इन्द्रियों द्‌वारा पदार्थों का ज्ञान होता है जबकि स्वसंवेदन संवेदन द्‌वारा प्राप्त प्रत्ययों पर किये मन के व्यापारों का प्रत्यक्षीकरण है[8] जिसमें प्रत्यक्ष, संवेग, विश्वास, विचार, तर्क, संकल्प जैसी मन की क्रियायें का समावेश होता है। मन के गुण शरीर से सर्वथा भिन्न है। शरीर जङ द्रव्य है तथा मन आध्यात्मिक द्रव्य ।

अनुभववादी जार्ज बर्कले के मतानुसार मन एक सक्रिय तथा अभौतिक तत्त्व है। मन ही समस्त ज्ञान का अधिष्ठान है। बर्कले मन को ही ज्ञाता, आत्मा, अहं मनोवैज्ञानिक जीव (Empirical ego) आदि शब्दों से अभिहित करते हैं

[2] डॉ. हरिशंकर उपाध्याय, पाश्चात्य दर्शन का उद्‌भव और विकास, पृ. 140

[3] याकूब मसीह, पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, पृ. 227

[4] N. C. Panda, Mind and Supermind, p. 348

[5] डा. शोभा निगम, पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय, पृ. 75

[6] "Mind at birth is a clean slate or tabula rasa and all the characters of knowledge are acquired through experience." मन एवं मानसिक स्वास्थ्य, पृ. 11

[7] "There is nothing in the intellect, which was not first in the senses." John Locke

[8] 'Reflection is the perception of the operation of our own minds within us as it is employed about the ideas if has got.' - जे. एस. श्रीवास्तव, पाश्चात्य दर्शन की प्रवृतियां, पृ. 76

जो ज्ञान का उद्गम स्रोत्र है। संकल्प करना, इच्छा करना, चिन्तन करना, कल्पना करना व स्मरण करना आदि क्रियायें ज्ञान के ही विविध रूप है।[9] मन के विचारों के अतिरिक्त बाह्य जगत् में कुछ भी अवशिष्ट नहीं है। मन एक अमिश्रित पदार्थ जिसका शरीर के नष्ट होने के बाद भी अस्तित्व बना रहता है।[10] बर्कले मन के दो प्रकारों का उल्लेख करता है एक मानवीय मन (आत्मा) व दूसरा ईश्वरीय मन। अनुभववाद को अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचाने वाले दार्शनिक डेविड ह्यूम के अनुसार आत्मा या मन अशाश्वत व अनित्य है क्योकिं मन का इन्द्रियादि के अनुभव द्वारा ज्ञान नहीं होता है। डेविड ह्यूम के अनुसार अनुभव के अतिरिक्त जगत् में अन्य किसी की सत्ता नहीं है। आत्मा(मन) का इन्द्रियों से अनुभव नहीं होता है अतः इनकी सत्ता नहीं है। ह्यूम का प्रसिद्ध कथन है - "मैं जब जब इस (तथाकथित) आत्मा का अनुभव करने के लिये इसके अन्दर गहराई से प्रवेश करता हूँ, तब तब किसी न किसी संस्कार अथवा प्रत्यय से टकराकर रह जाता हूँ । ये संवेदनाये अथवा प्रत्यय गर्मी-ठण्ड, प्रकाश-छाया, प्रेम-घृणा आदि से सम्बंधित होते है।[11]" इस प्रकार ह्यूम के मत में मन या आत्मा संस्कारों एवं प्रत्ययों या मानसिक क्रियाओं के अविच्छिन्न प्रवाह के अतिरिक्त कुछ नहीं है।[12]

पश्चिमी दार्शनिक परम्परा में मन का स्वरूप स्पष्ट रूप से उभर ही नहीं पाया है और परस्पर विरोधी विचारों से भ्रमित रहा। पाश्चात्य दर्शन में जहाँ एक ओर मन को आत्मा का पर्यायवाची या समतुल्य मान लिया गया है वहीं दूसरी ओर शरीर और मन को पृथक्-पृथक् स्वीकार किया गया है और इसी के आधार पर सम्पूर्ण दर्शन परम्परा में समस्त तत्त्वमीमांसीय पदार्थों की विशद् व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। आत्मा (मन) को कहीं पर अस्तित्व को ही नकार दिया गया है तो अन्यत्र इसे जड पदार्थ से उद्भूत स्वीकारा गया है। संक्षेप में पश्चिमी दर्शन परम्परा में मन की अवधारणा सम्यक् एवं यथार्थ विवेचन से वंचित्त अर्धविकसित ही रह जाती है।

आधुनिक विज्ञान में मन की अवधारणा भौतिक व स्थूल दृष्टिकोण के कारण एकांगी है यहाँ मानव चेतना और मन का स्रोत्त मस्तिष्क को स्वीकार किया गया है। मन की क्रियायें मात्र भौतिक क्रियायें है जो स्नायु, मस्तिष्क एवं इन्द्रियों जैसे उच्चस्तरीय संगठित पदार्थों से उद्भूत होती है।[13] आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में भी दार्शनिक जगत की तरह वैज्ञानिकों के लिये मन अध्ययन एवं नवोन्मेषी अन्वेषण का मुख्य विषय रहा है। अमेरिकी विद्वान हिलेरी पुटनम के अनुसार "मानव मन मस्तिष्क रूपी मशीनी यंत्र के प्रकार्य (Function) से अधिक कुछ भी नहीं है।"[14] अर्थात् आधुनिक विज्ञान शारीरिक अंग मस्तिष्क को ही मन के रूप में स्वीकार करते हैं। आधुनिक विज्ञान में शरीर एक मशीन है और मन इस मशीन के अंदर एक और मशीन है। छोटी मशीन बड़ी मशीन के अंदर स्थिति है और बड़ी मशीन को नियंत्रित करती है तथा इस मशीन को चलाने वाला कोई यंत्र नहीं है। इसे कार्य करने के लिए बनाया गया है और यह स्वतः ही वर्तमान संरचना एवं क्रिया की स्थिति तक विकसित हुई है। इसमें सब कुछ यांत्रिक ढंग से स्वतः ही चल रहा है। इस प्रकार आधुनिक विज्ञान की मन की यन्त्रवादी व्याख्या करता है। अधिक से अधिक मस्तिष्क एक तरह का जीवंत इलेक्ट्रोनिक यंत्र है और इसकी विद्युत-चुम्बकीय गतिविधियाँ मन है।[15] पर्यावरणवादी जार्ज जॉन रोमेंन के शब्दों में "जो परिवर्तन मन में घटित होता है वैसा ही कुछ मस्तिष्क में होता है और दोनों में कोई अंतर नहीं है।[16] वैज्ञानिक मार्टनहंट मन को मस्तिष्क की

[9] डॉ. हरिशंकर उपाध्याय, पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास, पृ. 219

[10] डॉ. दयाकृष्ण, पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, भाग-2, पृ. 186

[11] "When I enter most intimately into what I call myself, I always stumble on some particular perception or the other, or heat or cold, light or shade, love or hatred, pleasure or pain. I never catch myself at any time, without a perception and never observe any things, but the perception." Hume's treatise, p.252

[12] डॉ. हरिशंकर उपाध्याय, पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास, पृ. 235

[13] मानव चेतना, प्रो. ईश्वर भारद्वाज, पृ. 4

[14] H. Putnam- Mind, Language and Reality: Philosophical papers, 2 Vols. P. 362

[15] N. C. Panda- Mind and Supermind, P. 490

[16] George John Romanes- Mind and Motion, P. 183

जटिल क्रियाओं की श्रृंखला मानते है। उनके अनुसार 'मन मस्तिष्क से अलग नहीं है बल्कि मस्तिष्क का प्रोग्राम है तथा मन मस्तिष्क की जैविक क्रियाओं का सामूहिक प्रभाव मात्र है'[17]। साइकोबायोलॉजिस्ट विलियम उत्तल के शब्दों में "मन का स्नायु तन्त्र से वही सम्बन्ध है जो घूर्णन गति का पहिये से। जिस प्रकार घूर्णन मात्र संगठित गति का सामूहिक प्रभाव भर है व इसका पहिये से अलग स्वंय का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। उसी प्रकार मन मस्तिष्क से पृथक् कुछ भी नहीं है।[18] नोबल पुरस्कार विजेता न्यूरोलोजिस्ट सर जॉन एक्ल्स मस्तिष्क से स्वतन्त्र मन का पृथक् अस्तित्व स्वीकार करते है। कार्ल पोपर के साथ वे अपना मत व्यक्त करते हुये कहते है कि 'मन चैतन्य सत्ता हें और वह मस्तिष्क पर नियंत्रण रखता है'। मन व मस्तिष्क दोनों अलग-अलग है तथा दोनों के बीच दुर्बल व अल्पप्रभावी प्रतिक्रियायें होती हैं।[19] अमेंरिकी वैज्ञानिक विलियम जेम्स के अनुसार भी मन की मानसिक संरचना मस्तिष्क को नियंत्रित करती है। मस्तिष्क पर मन के चिंतन, ज्ञान और व्यवहार का उल्लेखनीय प्रभाव रहता है।[20]

प्राचीन भारतीय आयुर्विज्ञान के प्रवर्तक शरीर और मन की भौतिक संरचना व इनके संबंधों पर विस्तृत प्रकाश डालने वाले सम्भवतः अब तक के ज्ञात इतिहास के प्रथम वैज्ञानिक थे।[21] इस पारम्परिक उपचार पद्धति की पुरातनता को जीवन के विज्ञान (आयुर्वेद) के रूप में 5000 वर्ष पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप में यहाँ के निवासियों की जीवन शैली में स्पष्टतः देख सकते है।[22] किन्तु आधुनिक विज्ञान में यह तथ्य अभी तक सम्यक्रुपेण उभर कर सामने नहीं आया है।

मनोविज्ञान में मन का स्वरूप निर्धारण:- विज्ञान के सामान मनोविज्ञान का अस्तित्व भी अधिक प्राचीन नहीं है पूर्व में मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र का अभिन्न अंग रहा है। आधुनिक मनोविज्ञान को स्वतन्त्र प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में इसकी स्थापना का श्रेय जर्मनी के विलियम वुंट को जाता है जिन्होंने सन् 1979 में लिपजिग यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना करके मनोविज्ञान को दर्शन के क्षेत्र से बाहर ला खड़ा कर दिया। तब से आधुनिक मनोविज्ञान की यह चिन्तनधारा संरचनावाद (Structuralism), प्रकार्यवाद (Functionalism), व्यवहारवाद (Behaviourism), मनोविश्लेषणविज्ञान (Psychoanalysis) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान(Cognitive Psychology), मानवतावाद (Humanism) आदि विविध संप्रदायों के रूप में अपनी विकास यात्रा पर गतिशील है। मन के सम्बन्ध में इनके विविध मत निम्नलिखित है-

संरचनावाद (Structuralism) :- संरचनावादी मानव व्यवहार की व्याख्या मानव शरीर की संरचना के आधार करते हैं। संरचनावादी जर्मन मनोवैज्ञानिक दार्शनिक **विल्हेम वुंट** सन् 1979 में मनोविज्ञान को दर्शनजगत् से पृथक् कर प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित किया । वे मन की आणविक प्रकृति का समर्थन करते हुए इसके दो घटक तत्त्व संवेदना और भावना का उल्लेख करते हैं जिनका विकास तंत्रिका तन्त्र से सम्बन्धित है। इन दोनों तत्त्वों के साहचर्य के साथ मानसिक क्रियाओं का निर्माण होता है। वुंट मानसिक क्रियायों पर पर्याप्त बल देते हुये मन तथा शरीर की क्रियाओं को पृथक्-पृथक् स्वीकार करते है, दोनों परस्पर निर्भर नहीं है किन्तु मानव तथा शरीर एक दूसरे से परस्पर सम्बंधित है। मन सम्बन्धित अध्ययन प्रक्रिया के सन्दर्भ में अंतर्दर्शन की विधि को महत्व देते है और मानसिक क्रियाओं की शारीरिक आधार पर व्याख्या करते है। वुंट मन तथा शरीर में एक

[17] Murton Hunt- The Universe Within, PP. 80-81

[18] मानव चेतना, प्रो. ईश्वर भारद्वाज, पृ. 5

[19] योग और मानसिक स्वास्थ्य पृ.18

[20] W. James – Principles of Psychology, P. 470

[21] G.p. Dubey, Science and Philosophy of Indian medicine. p. 33

[22] Ayurveda is the five thousand year old "Science of Life," the traditional natural healing system of India. Dr. David frawley, Ayurveda and the Mind, p. 4

प्रकार के समानांतर सम्बन्ध की विवेचना करते है, किन्तु यह स्पष्ट नहीं करते कि मन और शरीर एक दूसरे के समानांतर होते हुए भी किस प्रकार परस्पर संबंधित है।

विल्हेम वुंट के शिष्य **एडवर्ड ब्रेडफोर्ड टीचनर** मन और चेतना में अंतर स्वीकार करते हुये मन को व्यक्ति के जन्म से लेकर मरण तक के अनुभवों के समुच्चय के रूप में परिभाषित करते है और चेतना को किसी क्षण व्यक्ति के अनुभवों का समुच्चय मानते है। टीचनर के अनुसार व्यक्ति के अनुभव उसकी शारीरिक बनावट, मस्तिष्क और तंत्रिका तन्त्र पर आधारित होते है। वे भी वुंट के सामान शरीर और मन के बीच समानान्तरवाद के पक्षधर है, इनके मध्य एक दूसरे के कारण कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है। वुंट जहाँ मन के दो घटक संवेदना और भावना स्वीकार करते है,वहीं टीचनर इनमें प्रतिमा (Image) नामक तृतीय घटक ओर जोड़ देते है। यहाँ संवेदन इन्द्रियजन्य अनुभवों का आधार है, भावना संवेगों में विद्यमान मूलभूत तत्व है तथा प्रतिमा विचार, कल्पना और स्मृति का मूल आधार है।

इस प्रकार वुंट और टीचनर जहाँ मन को स्थितज (static) स्वीकार कर इसके टुकड़े-टुकड़े कर अलग-अलग खंडों में अध्ययन की बात कहते हें, वहीं अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **विलियम जेम्स** मन को निरंतर परिवर्तनशील चेतना के प्रवाह के रूप में स्वीकार करते है। संरचनावादी मन के विकास में अनुभव की महत्वपूर्ण भूमिका मानते है इसके विपरीत विलियम जेम्स प्रकार्य पर अधिक ओर देते है इस प्रकार जहां एक ओर संरचनावाद का विरोध होता है वहाँ दूसरी ओर प्रकार्यवाद की स्थापना की नींव पड़ती है।

प्रकार्यवाद (Functionalism) :- प्रकार्यवाद का उदय अमरीका में सन् 1894 में **जॉन डेवी** के नेतृत्व में हुआ जिसके अन्य विद्वान जेम्स एंजेल, हार्वे कार, वुथवर्ड आदि है। जॉन डेवी मानसिक प्रकार्यों पर विशेष बल देते है और मानवीय व्यवहार की व्याख्या पर्यावरण के साथ प्राणी का समायोजन स्थापित करने की चेष्टा के रूप में करते है। जिसमें ज्ञानार्जन (Knowing), इच्छा करना (Willing) तथा अनुभव करना (Feeling) का समावेश होता है। मन सक्रिय है तथा वह उन समस्त क्षमताओं का योग है जिनके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के साथ समायोजन करता है। प्रकार्यवादी मन और व्यक्ति को अभिन्न माननें के कारण सम्पूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर बल देते है। इसी प्रकार प्रकार्यवादी **जेम्स एंजेल** भी पर्यावरण के साथ समायोजन के सतत प्रयास में मन के जन्म एवं विकास की बात कहते है तथा संवेग, संवेदन कार्य करने की इच्छा को पर्यावरण से समायोजन करने की अभिव्यक्ति के रूप में मानते है। प्रकार्यवाद को प्रौढावस्था तक पहुंचाने वाले हार्वे ए. कार के अनुसार शरीर और मन दो भिन्न-भिन्न तत्व नहीं है, बल्कि दोनों अभिन्न है। अतः उनके अनुसार 'मानसिक क्रियाओं' का तात्पर्य व्यवहार के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पक्षों से है।

व्यवहारवाद (Behaviourism) :- व्यवहारवाद सम्प्रदाय संरचनावाद और प्रकार्यवाद दोनों के विरोध का परिणाम के रूप में उदित होता है। जिसका आरम्भ मन के बहिष्कार के रूप में वाट्सन के चिन्तन में परिलक्षित होता है। वाटसन के अनुसार संवेग, चिन्तन, और विचार पूर्णतः शारीरक क्रियायें है जिनका कारण शारीरिक मांसपेशियाँ व ग्रंथियाँ है। मनोविज्ञान की यह शाखा विशुद्धतः वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक है। अतः इस सम्प्रदाय के अनुसार मन का ज्ञान असम्भव है व मनोविज्ञान के विषयवस्तु के रूप में व्यवहार को केन्द्रबिन्दु स्वीकार करता है तथा चेतना के अध्ययन का बहिष्कार करता है। इस प्रकार व्यवहारवाद मानव के यंत्रवत् अध्ययन का समर्थन करता है जिससे स्पष्टतः अदृश्यमान मानवीय मन सम्बन्धित पक्ष अछूते रह गये हैं।

मनोविज्ञान के गेस्टाल्ट सम्प्रदाय का जन्म जर्मनी के मनोवैज्ञानिक मैक्सवर्दाइमर चिन्तन से होता हैं। गेस्टाल्ट का अर्थ है- समग्रता। मनोवैज्ञानिक मैक्स वर्दाइमर के अनुसार अनुभव की समग्रता या गेस्टाल्ट के कारण शरीर की तंत्रिकाओं में भी एक प्रकार का गेस्टाल्ट बन जाता है जो अपने आप में पूर्ण है जिसका बोध विश्लेषण से

How to cite: कुमार, अ. (2025). पाश्चात्य परंपरा में मन का समीक्षात्मक अध्ययन. *Multidisciplinary Multilingual Research Journal, 1*(2), 32-38. https://doi.org/10.64006/mmrj/1205

सम्भव नहीं है।[23] अतः यह सिद्धान्त मनोविज्ञान के अध्ययन के सम्बन्ध में समग्रता और अखण्डता के सिद्धान्त पर बल देता है। इससे पूर्व मनोवैज्ञानिक अध्ययन में विश्लेषण की प्रणाली ही प्रचलित थी।

मनोविश्लेषण एक ऐसा सम्प्रदाय है जिसका जन्म मनोविज्ञान व दर्शन से न होकर चिकित्साशास्त्र से हुआ है। जिसके जनक सिग्मंड फ्रायड है जिनके अनुसार शरीर में स्थित मस्तिष्क व तन्त्रिका तन्त्र मानसिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है तथा मानवीय चेतना से इसका गहरा सम्बन्ध है।[24] फ्रायड के मनोविश्लेषण चिन्तन में मन के नये आयामों का रहस्योद्घाटन करता है। फ्रायड के अनुसार मन के दो भाग है- चेतन और अचेतन। मन का मात्र 10% भाग ही चेतन है शेष अधिकांश भाग अचेतन है। इस संदर्भ में इदम् (Id), अहम् (Ego), परम अहम् (Super ego) फ्रायड की विकसित अवधारणायें है।[25] इदम् व्यक्ति के जन्मजात गुण तथा जैविक प्रवृतियों का स्रोत है। यह मन का अज्ञात और अचेतन विवेकरहित भाग है तथा दमित इच्छाओं व वासनाओं का आधार है। अहम् इदम् का वह अंश है जो बाह्य पर्यावरण से प्रभावित होकर विकसित होने वाला मन का चेतन अंश है जो अचेतन मन की अवांछनीय इच्छाओं को नियंत्रित करता है। परम अहम् का सम्बन्ध नैतिक अभिवृत्तियों, आदतों और मूल्यों से है, जिसे व्यक्ति शिक्षा द्वारा प्राप्त करता है। यही व्यक्ति को आदर्श जीवन जीने के लिये प्रेरित करता है। ग्रेगरी के शब्दों में, फ्रायड एक तरह से मन मस्तिष्क के समान्तरवाद को लेकर चल रहा था जिसमें मन मस्तिष्क को प्रभावित करता है।[26] अतः यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि फ्रायड की यह मन सम्बन्धित अवधारणा बिना किसी भौतिक व अभौतिक तथ्यों के सन्दर्भ से रहित विशुद्ध रूप से परिकल्पित थी।

मनोविश्लेषक एडलर के अनुसार 'किसी व्यक्ति के मन का अध्ययन तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि उसके सम्पूर्ण जीवन का ज्ञान न हो'। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के जीवनलक्ष्य और जीवन शैली ज्ञान होना आवश्यक है। एडलर के शब्दों में "व्यक्ति के व्यवहार एवं मानसिक क्रियाओं की व्याख्या उसका अंतिम लक्ष्य ही कर सकता है (The final goal alone can explain man's behaviour.)'[27]। एडलर के विचार में चेतन और अचेतन सर्वथा एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं। जब हम अचेतन को समझ जाते है तब वह चेतन हो जाता है तथा जब तक चेतन को नहीं समझ पाते तब तक वह अचेतन रहता है।[28]

मनोविश्लेषक जुंग मन के स्थान पर चित्त (Psyche) का शब्द का प्रयोग करते है। जुंग के मतानुसार चित्त में अचेतन और चेतन दोनों भाग समाविष्ट रहते हैं। जुंग अचेतन को प्राथमिक स्वीकार करते है तथा चेतन को द्वितीयक। चेतन मन का ऊपरी भाग है तथा अचेतन के बिना रह नहीं सकता। अचेतन के भी यहाँ दो रूप हैं - वैयक्तिक और सामूहिक। वैयक्तिक अचेतन के व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों के आधार पर विकसित होता है और सामूहिक अचेतन उसकी सांस्कृतिक परम्परा एवं आनुवंशिकता द्वारा निर्मित होता है।[29] मानसिक क्रियाओं में जुंग चिन्तन (Thinking), भावना (Feeling), संवेदना (Sensation) और सहजबोध (Intuition) पर महत्त्व देते है। इस प्रकार सामूहिक चेतन और वैयक्तिक अचेतन जुंग की मन सम्बन्धी नूतन अवधारणा है जो उचित होते

---

[23] मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, डा. गायत्री, पृ. 214

[24] वही, पृ. 265

[25] वही, पृ. 276

[26] R.L. Gregory, Mind in Science, p. 488

[27] A. Adler, The Practice and Theory of Individual Psychology, P. 46

[28] 'All Individuals consider for most part only things that are useful for their view and attitude. In other words that becomes conscious which advances us and that remains unconscious which might disturb our argumentation.' A. Adler, Problem of Neurosis, P. 152

[29] C.G. Jung, The Archetype of Collective Unconsciousness, P. 43

हुये भी इस सन्दर्भ में त्रुटिपूर्ण है कि इनका मूल आनुवांशिक है। फ्रायड सामूहिक अचेतन की अवधारणा को अस्वीकार करते है, किन्तु उनके अनुसार 'वैयक्तिक अचेतन अनुवांशिक होता है', भी त्रुटिपूर्ण है।[30]

पाश्चात्य परम्परा में मन सम्बन्धी अवधारणा मौलिक त्रुटियों से ग्रस्त रही है। इस मूल समस्या का उद्गम यह है कि इस परम्परा के सभी विचारक एक ओर तो मन और शरीर की पृथक्-पृथक् सत्ता स्वीकार करते हैं तथा दूसरी ओर मन को आत्मा के समतुल्य स्वीकार करते हैं। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार आत्मा (मन) किसी का अनुभव नहीं होता है किन्तु चेतना का अनुभव होता है तथा चेतना तन्त्रिका-तन्त्र की स्वचालित क्रिया है तथा इसी चेतना से प्राणी का समस्त व्यवहार यंत्रवत् चल रहा है। जिस प्रकार बच्चा जन्म लेते ही माता के स्तनों के मुँह लगा लेता है उसी प्रकार उद्दीपक के सामने आते ही चेतना में स्वतः अनुक्रिया होती है। इसके लिए आत्मा की आवश्यकता नहीं होती है।[31] पाश्चात्य परम्परा में मनोदैहिक अध्ययन के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक प्रविधि को अधिक महत्त्व दिया गया है। जिसके अंतर्गत मन व शरीर का पृथक्-पृथक् स्वीकार किये गये है।

संदर्भ सूची

Frawley, D. (2001). Yoga and Ayurveda: Self-healing and self-realization. Motilal Banarsidass Publishers.

Gyatso, G. K. (2007). Understand the mind. Motilal Banarsidass Publishers Pvt. Ltd.

Wicher, I. (n.d.). The integrity of the Yoga Darshana – A reconsideration of classical Yoga. D.K. Printworld (P) Ltd.

Keswani, N. H. (1974). The science of medicine & physiological concepts in ancient & medieval India. AIIMS.

Hornle, A. (1907). Studies in the medicine of ancient India: Part I. Oxford University Press.

Sinha, J. (1934). Indian psychology of perception. Kegan Paul, Trench, Trubner & Co. Ltd.

Springer Netherlands. (2003). Culture, Medicine and Psychiatry, 27(2).

[30] N. C. Panda- Mind and Supermind, p. 417-18

[31] A Manual of Psychology, Stout, p. 117

How to cite: कुमार, अ. (2025). पाश्चात्य परंपरा में मन का समीक्षात्मक अध्ययन. *Multidisciplinary Multilingual Research Journal, 1*(2), 32-38. https://doi.org/10.64006/mmrj/1205